1951 (P)
694
17
MICROFILM

125
125
694

राष्ट्रीय तूफान

जिसमें

चुनिन्दा चुनिन्दा राष्ट्रीय गाने एक दफा पढ़ने ही से दिलको फड़कादेने वाली कवितावों का संग्रह।

प्रकाशत व संग्रहकर्त्ता
के० एल० बर्मन
विसेशरगंज
बनारस सिटी।

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० [मूल्य -)
सैकड़ा ४॥≡)

891.431
B927A

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 694
Date 12.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR 1931
DEPARTMENT

राष्ट्रीय तूफान।

(१)

थे हम भी कभी जाँबाज वतन,
ऐ चर्ख ! हमें बरबाद न कर।
जिंदा हैं मगर यह जीस्त नहीं,
अब और सितम ईजाद न कर।
जर और जवाहर सारा लुटा,
सब शान गई, नादार बने।
फैशन पै लुटाते मुल्क का जर,
नाशाद को क्यों तू शाद न कर॥
जब गांधी जी ने जोर दिया,
जेलों के उधर दरवाजे खुले।
हम आहो बुका से काम जो लें,
देते हैं डपट फरियाद न कर॥
गोलमेज का तोफा दिया जो हमें,

नादान खुशी से उछलने लगे।
क्या जाल बिछाया हिकमत का,
बातों में फकत आजाद न कर ॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा,
दिया डंका बजा आजादी का।
हे कृष्ण मुरारी कर तू मदद,
मजलुम को अब बेदाद न कर ॥

(२)

देश पर जो अब तक अत्याचार हुए हैं।
बदला चुकाने के लिये तैय्यार हुए हैं ॥
अफसोस तो ये है भाई हैं जबर करते।
गरदन पर वार करने को तलवार हुए हैं ॥
हम लोग जान देते हैं स्वराज के लिये।
यह लाल पगड़ी बाँध दावेदार हुए हैं ॥
गोली चलाते हम पर लाठी को मारते।
उनके समझ में हम सब बेकार हुए हैं ॥
देगा न साथ आपका वो मित्र विदेशी।
जो भाई पर सितम करने को तैय्यार हुए हैं ॥
घर आपके क्या होता तुमको नहीं खबर।
भाई तुम्हारे अब से लाचार हुए हैं ॥

यह नौकरशाही मान लो बमलट की सीख को ।
दुश्मन के देखो आप खिदमतगार हुए हैं ॥

(३)

हमें देश भक्ति दिखाना पड़ेगा ।
ये जुल्मों की हस्ती मिटाना पड़ेगा ॥
रहना अगर जो तुम्हें हो यहाँ पर ।
तो आजाद भारत कराना पड़ेगा ॥
खाते हमारा जुल्म करते हम पर ।
हमें इसका बदला चुकाना पड़ेगा ॥
खद्दर को पहनो ये तुमको हुक्म है ।
नहीं लण्डन लेडी ले जाना पड़ेगा ॥
तुझे दर्द आती नहीं है सितमगर ।
और कहते हो गोली चलाना पड़ेगा ॥
गोली चलाओ या तोपें लगाओ ।
मगर पीछे भारत मनाना पड़ेगा ॥
जबर करते हम पर हमारे ही भाई ।
उन्हें देखो पीछे पछताना पड़ेगा ॥
कहते हैं काशी ये मान लो कहना ।
खुदा के यहाँ मुँह दिखाना पड़ेगा ॥

(४)

जीते हैं जब तलक हम भारत का दम भरेंगे ।
सौ जन्म पैदा होके हित देश के मरेंगे ॥
हरगिज़ न पाँव पीछे टलने का अब हमारा ।
सब देश भाइयों का ता उम्र दुख हरेंगे ॥
पावर है उसको इतना फाँसी तलक चढ़ादे ।
पर हम अहिंसा व्रत से हरगिज़ नहीं टलेंगे ॥
कातिल तुम्हारी हरकत हमसे सही न जाती ।
देखें ये आप कब तक हमपर जबर करेंगे ॥
इस वख्त देश पर जो जुल्म हो रहा है ।
जाकर खुदा के आगे महशर में हम कहेंगे ॥
लेवें गवाह में हम जलियान वाला बाग ।
पेशावर वाला किस्सा दरपेश हम करेंगे ॥
ये देश भाइयो तुम मादक पदार्थ छोड़ो ।
बमलट हमेशा सबसे येही कहा करेंगे ॥

(५)

गरीबों को अब हम सताने न देंगे ।
ये तुमको हुकूमत चलाने न देंगे ॥
खिलाते हो हमको अगर रूखी रोटी ।

मटन चाय तुमको भी खाने न देंगे ॥
रवाना करो लेडियाँ सूबे लंदन।
पर तुमको तो आराम पाने न देंगे ॥
लेजाके घी और गल्ला हमारा।
तुम्हें मौज़ हरगिज़ उड़ाने न देंगे ॥
रहे बस मुबारक तुम्हें वो तुम्हारी।
शराबों की बोतल यहाँ आने न देंगे ॥
हिन्द को चाहो तो कुर्ता सिलालो।
अब नेकटाई कालर लगाने न देंगे ॥
बिलायती चीनी घी वेजिटेबिल।
सिगरेट इत्यादि बिकने न देंगे ॥
भरोसे न रहना कहीं और किसके।
अब "काशी" में दंगा मचाने न देंगे ॥

(६)

किसकी बुलन्द आवाज़ ने
भारत को अब जगा दिया।
सोया पड़ा था बेखबर,
किसने इसे उठा दिया ॥
गुलामी में मेरे थे कसे,

चंगुल में मेरे थे फँसे।
रस्ता इन्हें आज़ादी का,
गांधी ने अब बता दिया ॥
क्या चैन से गुजरती थी,
हिस्की शराब ढलती थी।
फाकेकशी के हर्जे तक अब,
हमको बस पहुँचा दिया ॥
बिलायती कपड़ा त्यागकर,
खद्दर का कर प्रचार सब।
लंका शायर को एक दम,
मिल कर के बस रुला दिया ॥
करके जबर भी हारे हम,
आन्दोलन न होता कुछ भी कम।
चिढ़के दमन से और भी,
लंदन को बस हिला दिया ॥
माई गाड क्या करेंगे अब,
या भूखे ही अब मरेंगे सब,
इसने तो मेरे एक दम,
नाकों में दम पहुँचा दिया ॥
गर योंही बीते कुछ माह,

हो जाय लंडन खुद तबाह।
बमलट ने सच्चा हाल यह,
लिखकर तुम्हें सुना दिया ॥

(७)

काकुल की तरह आज जो बल खाए हुए हैं।
थोड़ी सी हुकूमत पै इतराए हुए हैं ॥
परवाह नहीं है देश, धर्म, नीति की इनको।
स्वारथ का भूत सर पर चढ़ाए हुए हैं॥
जिस हाँड़ी में खाते हैं करते हैं उसमें छेद।
घर अपना अपने हाथ जलाए हुए हैं ॥
बातो में आ कर गैर के बनते हैं निर्दयी।
डंडा ये बेकसों पर उठाए हुए हैं ॥
एक रोज ये रहे मेरे गले का हार।
अब कंकड़ हो ये आँख का सताए हुए हैं॥
बुद्धी हुई है नष्ट बस संगत प्रभाव से।
देश भाइयों का रिस्ता ये भुलाए हुए हैं॥
गरचे जो हो जाय अक्ल इनकी ठिकाने,
हिन्द क्या लन्दन का राज पाए हुए हैं॥

(८)

उठो वीर अब असहयोग पर हो जाओ बलिदाना।

असहयोग में चित्त लगाओ, तिरंगेझंडे के नीचे आओ।
भारत माँ की बन्द छुड़ाओ, गर चाहो कल्याना ॥
आँख मुँद क्यों पड़े हुये हो, नींद त्याग नहिं खड़े हुये हो।
गुलामी की बेड़ी में जकड़े हुवे हो ऐ भारत सन्ताना ॥
भारत माता दुखी तुम्हारी, आशा पूर्ण तक राह तुम्हारी।
जेल भरन की करो तयारी, जो भारत की शान बचाना।
स्वर्ग कामना जो हो मन में, असहयोग के आओ रन में।
होवे नाम देखो त्रिभुवनमें, गर गोली का बनो निशाना॥
फिर पछताओ अवसर बीते, देशभक्ति रस क्यों नहीं पीते
नहीं फिर होवें बड़े फजीते, जो बमलटकी सीख न माना॥

(६)

जुल्म डायर ने किया था, रंग जमाने के लिये।
हिन्द वालों को मुसीबत में, फसाने के लिये॥
खून से पंजाब में, डायर ने लिखकर डायरी।
रूबरू रख दी हमारे, दिल जलाने के लिये॥
बाग जलिया में शहीदों की, बने गर यादगार।
जायँगे आशिक वतन हा, आँसु बहाने के लिये॥
जिसने तन मन धन किया, योरप पै निसार।
आप अब तैयार हैं, उसको मिटाने के लिये॥
जब कहा मैंने कि डायर ने मारा बेखता।

हँस के बोला जुल्म था, ये आजमाने के लिये ॥
सर हथेली पर जो रक्खा डर है फिर किस बात का ।
सर कटाने के लिये है जाने के लिये ॥

हद हो गई जुल्मों की अब जुल्म सह सकते नहीं ।
बिन लिये आजादगी अब हम तो रह सकते नहीं ॥
ले अहिंसा तेग कर में आ डटे मैदान में ।
बिन किये अब सर निछावर हम तो रह सकते नहीं॥
जेहल की धमकी से क्या लो तोप से दीजे उड़ा ।
तज अहिंसा वृत कभी हम उफ भी कर सकते नहीं॥
देश पै बलिदान होकर होगये कितने शहीद ।
ये वीर भूमि पै कभी लो वीर घट सकते नहीं ॥
ये, ओडायर की जिन्दगी से आप शिक्षा लीजिये ।
वो मरा किस तौर से क्या आप कह सकते नहीं ॥
रामचन्द्र देखो दगा होगा नहीं किस का सगा ।
अन्याय का फल भोगे बिन कोई रह सकते नहीं ॥

देश का गर आप के दिल में ख्याल हो ।
तो दुश्मनों से आपका बांका न बाल हो ॥

कट जायँ बेढ़ियां ये गुलामी की सहज में।
हिम्मत का दौर दौरा हो भारत निहाल हो ॥
गरचे विदेशी वस्त्रों को दिल से उतार दो।
तो उन स्वार्थी जुलाहों का अवतर यह हाल हो॥
मोटा ही खानपान हो मोटा पहरान हो।
तो स्वर्ग सम ये भूमि हो आजादी हाल हो ॥
बाहर न जाय गल्ला स्वदेश का अगर।
हर साल हो समा फिर हरगिज न काल हो ॥
यतीन शहीद की है हसरत ये आखीरी।
पीछे कदम न जब तक दें पूरा सवाल हो ॥
चर्खे चलायें गरचे भारत की नारियां।
खद्दर का फेर हरगिज न यहाँ पै काल हो ॥
जावें जेहल में खुश हो गरचे जो भारती।
सूखा चमन यह फिर से देखो बहाल हो ॥
दुश्मन की गोलियों को सीने पै खायँ गर।
भारत का नाम हरसू हो जाहिर इकबाल हो॥
वमलट यह सल्तनत की अब यहां पै कहाँ गुजर।
जब हरएक बच्चा बच्चा इससे बेहाल हो ॥

(१२)

देशी खद्दर से प्रेम बढ़ाया करो।

नये फैशन में जर ना लुटाया करो ॥
हो रहा बरबाद भारत कट रहीं गौवें हजार,
आंख खोलो हिन्द वालो किस तरह होते हो ख्वार,
अपने बच्चे न भूखे सुलाया करो ॥
छा रही है नींद तुमको सो रहे संसार हो,
बरना तुम औलाद शेरों की हो पर लाचार हो,
जाती कौम की लाज बचाया करो ॥
हो गुलामी में फँसे इन फैशनों के प्यार से,
लुट गया सारा खजाना आप के घरबार से,
हस्ती अपनी न ऐसी मिटाया करो ॥
हो रहे कुर्बान देखो लाल भारत के जिगर,
सैकड़ो बुलबुल कफस में फँस रही जालिमके घर,
वीरो अपना न नाम लजाया करो ॥
द्वारका नाथ रक्षक है न घबरावो कभी,
कौम की खिदमत में तनमन से जो लग जावो सभी,
फिर ना खून के आंसू बहाया करो ॥

(१३)

अब प्यारे हिन्द वालों चेतो सुना रहा हूँ।
भारत के नौ जवानो तुमको जगा रहा हूँ ॥
भारत की सारी बहनो और भाइयों हमारे।

दुनियाँ में जो है करना वो मैं बता रहा हूँ ॥
घर में न बैठ जाओ अन्याय देख करके।
कुछ काम कर दिखाओ सब को जता रहा हूँ ॥
जलकर चिता से उनकी आजादगी के शोले।
निकलेंगे देख लेना स्मरण दिला रहा हूँ ॥
खिदमत वतन की करलो ऐ हिन्द के जवानों।
मत खौफ खाओ कुछ भी मरना सिखा रहा हूँ ॥
है आत्मा अमर सब और है शरीर नश्वर।
गिरना कभी न देखो गीता से गा रहा हूँ ॥
देशी प्रचार करलो फैशन का नाश करके।
इस से स्वराज होगा एक दिन बता रहा हूँ ॥
गोपाल 'लाल' रक्षर अब आज हैं तुम्हारे।
कसकर कमर खड़े हो बीरों उठा रहा हूँ ॥

(१४)

आजादी का दीवाना है मस्ताना भगतसिंह।
बम केश में पकड़ाना ये दीवाना भगत सिंह ॥
आलम की एक सान है मस्ताना भगतसिंह।
हम बागी का अरमान है दीवाना भगतसिंह ॥
लाहौर का रहने वाला है वो शेरोबबर दिल।
आजादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह ॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में।

हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह ॥
होती थी मीटिंग असम्बली में जिस दम फेका बम ।
इस केश में पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह ॥

(१५)

भारतवासी बचाओ हम फरियाद भी हुए ।
मुमकिन ना मुमकिन सभी इरसाद भी हुये ॥
दागेसितम औ सखतिया बेदाद भी हुये ।
जरमन की लड़ाई में बरबाद हम हुये ॥
हम क्या बतावें किस कदर फरियाद हम हुये ।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुये ॥
जब जर की जरूरत पड़ी तब मैंने जर दिया ।
जब सर की जरूरत पड़ी तब मैंने सर दिया ॥
हाजत पड़ी बसर की तो मैंने बसर दिया ।
खाली थैली इंगलैण्ड की भारत ने भर दिया ।
मुसलिम से कहा गाय की कुरबानी तुम करो ।
हिन्दू से कहा चुप क्यों हो जल्दी से लड़ मरो ॥
फरमाया पुलिस वालों से कि इन दोनों को धरो ।
मुद्दत से जेल खाली है इन दोनों को भरो ॥
सरकार की इन चालों से बरबाद हम हुये ।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुये ॥

समाप्त ।

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—
'लक्ष्मी-प्रेस' नीलकण्ठ, बनारस में मुद्रित।